Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY, 2019, VOL- 7/34

'श्रृंखला की कड़ियां' में स्त्री छवि

मीनाक्षी

सहायक प्रवक्ता, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

महादेवी वर्मा के साहित्य में स्त्री विमर्श पर चर्चा करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि स्त्री विमर्श क्या है ? समकालीन भारतीय साहित्य में स्त्री विमर्श भारतीय समाज की विसंगतियों की उपज है इसमें पहला तत्व तो स्त्रियों में अपने प्रति किए जाने वाले अन्याय का प्रतिकार करना ही है और यह तत्व हर कमजोर वर्ग की लड़ाई में रहा है। आज बदले हुए परिवेश में स्त्रियों से जुड़े सवालों की को अनदेखा करना अब असंभव हो गया है ।

नारियां पुरुषों से हीन नहीं होती । सामाजिक व्यवस्था ने इन्हें हीन बना रखा है । सामंती व्यवस्था ने शोषित बनाया है । सामंती समाज में नारी और भूमि को एक ही दृष्टि से देखा जाता है लेकिन आज यह स्थिति नहीं है उसमें धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। स्त्री विमर्श उसी का जीवंत दस्तावेज है। स्त्री विमर्श का समाजशास्त्र अत्याचारों की हिंसक कार्रवाई से उपजता है । अत्याचार को केंद्र बनाकर अपनी शुरुआत करने वाले में स्त्री विमर्श में स्त्रियों की सामाजिक - आर्थिक प्रगति, शोषण, अन्याय , गुलामी आदि की बातें कम रह जाती हैं।

"स्त्री विमर्श एक ऐसा विमर्श है, जो वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहां कहीं दमन, शोषण और उत्पीड़न है - चाहे जिस वर्ग जिस नस्ल की स्त्री त्रस्त है वह उसे अपने परचम के नीचे लेता है ।"

"नारी - मुक्ति की अवधारणा के इर्द - गिर्द रचा गया साहित्य स्त्री - विमर्श माना गया है ।"

स्त्री विमर्श में स्त्री की पूरी बनावट उसके जातीय संस्कार, जीवन से उसका संपर्क बिंदु सब कुछ आ जाता है। वह बिंदु उसका ही है, दूसरे का नहीं।

संसार की प्रमुख विकसित संस्कृतियों में से प्राय: किसी में भी नारी की दशा संतोषजनक नहीं है। इन सभी संस्कृतियों का प्रबुद्ध वर्ग विशेषकर प्रबुद्ध नारी वर्ग इस असंतोष दशा का काफी समय से विरोध कर रहा है । भारत में भी ऐसा विरोध होता रहा है और महादेवी वर्मा ने भी इसका विरोध किया है। उन्होंने

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अपने नारी विषयक निबंधों में नारी की दशा को लेकर प्रबल विरोध दिखाया है । "नारी की दुर्दशा संबंधी निबंधों में उनका विरोध अग्रतापूर्ण है, जिसे उन्होंने खुद ही 'श्रृंखला की कड़ियां ' की भूमिका में स्वीकारा है ।

अन्याय के प्रति मैं स्वभाव से असहिष्णु हूं, अतः इन निबंधों में उग्रता की गंध स्वभाविक है, परंतु ध्वंस के लिए ध्वंस सिद्धांत में मेरा कभी विश्वास नहीं रहा।"

इस समय स्त्री विमर्श के रूप में जो मुख्य विमर्श साहित्य जगत में हो रहा है महादेवी की 'श्रृंखला की कड़ियां' सही मायने में स्त्री विमर्श को शुरू करने वाली पुस्तक है । हमारे समाज में स्त्री की हैसियत और अस्मिता से जुड़े जो तमाम मुद्दे हैं, वे सब महादेवी ने अपनी इस पुस्तक में उठाए हैं। पुस्तक में महादेवी ने लेनिन का जिक्र किया है । स्त्री मुक्ति संबंधित लेनिन के विचारों में उन्हें स्त्री मुक्ति की नई दिशा मिली और उन्होंने स्त्री मुक्ति के संदर्भ में लेनिन के विचारों को खुले मन से स्वीकारा और सहारा है।

महादेवी जी ने भारतीय समाज में स्त्री पराधीनता से जुड़े सारे सवालों को उठाया है और उन बातों का कड़ा विरोध किया है जो आचार संहिता के रूप में समाज के लोगों के द्वारा मात्र स्त्रियों के लिए निर्धारित हैं। स्त्री जीवन के तमाम पहलुओं को जैसे विवाह, शिक्षा, आर्थिक स्तर पर स्त्री की आत्मनिर्भरता, घर परिवार, घर के बाहर स्त्री जीवन। तात्पर्य यह है कि स्त्री जीवन से जुड़े तमाम महत्वपूर्ण प्रश्न 'श्रृंखला की कड़ियां' पुस्तक में उठाए गए हैं और स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार देने की बात महादेवी पुरजोर बल से कही है । लेनिन को उद्धृत करते हुए महादेवी कहते हैं -

"नारी के सहयोग का व्यावहारिक उपयोग ही नहीं है, वरन् वह मातृ भावना का व्यक्ति की सीमा से सामाजिक क्षेत्र में निरंतर प्रसार विस्तार और उदात्तीकरण है ।"

महादेवी मानती हैं कि 'पत्नी' स्त्री की मात्र पहचान नहीं है स्त्री के लिए आर्थिक स्वतंत्रता जरूरी है। महादेवी की स्वाधीन कल्पना विद्रोह को उचित ठहराती है अगर पुरुष प्रधान समाज स्त्री समाज के उत्पीड़न को अधिकार मानकर चलता हो।

'श्रृंखला की कड़ियां' पुस्तक का समर्पण उसकी पूरी अंतर्वस्तु को व्यंजित कर देता है।

"जन्म से अभिशप्त जीवन से संतप्त किंतु अक्षरधाम भारतीय नारी को"

वस्तुत: इस पुस्तक में भारतीय नारी की करुण चीत्कार है। स्त्री पीड़ा के इतिहास को सामने लाने वाले इन लेखों का आज 'स्त्री -विमर्श' के संदर्भ में विशेष महत्व है ।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

महादेवी के विवाह संबंधी विचार हैं कि विवाह स्त्री को अपना गुलाम बनाने का पुरुष का उपक्रम है और विवाह से स्त्री की स्वतंत्रता सदा के लिए समाप्त होती है।

कि आर्थिक असमानता को समाप्त करने का दायित्व समाज का है परिवार समाज और व्यवस्था से यही अपेक्षा है कि भारतीय नारी की मूल समस्या असंतुलन है उसमें कहीं असाधारण भी नेता है और कहीं असाधारण विद्रोह महादेवी मानती है कि स्त्री समाज की समस्याओं का हल निकालने की जिम्मेदारी आज की शिक्षित स्त्रियों की है महादेवी के अनुसार स्त्री को क्रांति के लिए एक स्वस्थ श्री चरण में अपनी उर्जा लगानी चाहिए नहीं मानती है कि आज ऐसा ऐसी शिक्षित महिला का मिलना दुर्लभ है जो केवल घर से घर के कामकाज के में संतुष्ट हो आज शिक्षित महिलाएं घर और बाहर के जीवन में सामंजस्य लिखने का प्रयास कर रही है महादेवी ने नारी जीवन के विषय में और शोषण को तीखे पन से आने वाली जागरूक प्रतिभागी थी पुस्तक में नारी को केंद्र में रखकर महादेवी ने सामाजिक जीवन की विषमताओं को स्पष्ट कर दिया है यहां उनके वैचारिक चेतन का यथार्थ प्रेरित सत्य अभिव्यक्त हुआ है आज स्त्री बहस के केंद्र में राजनीति के भी और साहित्य के वर्ग का आज से 50 वर्ष पूर्व जो मार्मिक रेखांकन महादेवी ने किया है उसे देखकर किसी को भी आश्चर्य हो सकता है महादेवी वर्मा की स्त्री के सशक्तिकरण के विषय में बहुत महत्व भूमिका रही है उनके इस कार्य का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है यह पुस्तक उनके विचारों से ओतप्रोत है और भी इस विषय को नए आयाम देने और सोच के लिए नए प्रश्न उठाने में अग्रणी वह सफल रही हैं नारी निबंध ओं रेखाचित्र और संस्मरण में महादेवी ने जिलाधिकारी सामाजिक सा विषय निबंध ओं के विस्तार का परिचय दिया है समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र हमारी आंखें खोलने वाला है विधवाओं और अवैध संतानों की समस्याओं तथा सामान्य नारी अपेक्षाओं पर बहुत गहराई से चिंतन प्रस्तुत किया है चिंतन में उनका दृष्टिकोण रचनात्मकता रहा है झूठा विद्रोह करने वाली आदि नेताओं का उन्होंने कभी भी समर्थन नहीं किया उनमें तर्क केंद्रित आधुनिकता का समर्थन है महादेवी वर्मा के श्रीचंदन का प्रस्थान बिंदु भारतीय स्त्री की दयनीय स्थिति है दूसरी के करुण क्रंदन उनके जीवन कभी मन को बेचैन करते हैं अपने मन को शांत करने वाली कोशिश करूंगा था के बारे में लिखते हुए भारतीय श्री के भव्य भिंड के अंदर दम घुट तीसरी का वास्तविक चित्र खींचती है और विकसित समाज के नारीत्व की गरिमा का चित्रण है उसके प्रति समाज की श्रद्धा की मात्रा पर विचार कर कोई उसे पूर्ण संस्कृत समाज का अंग ही समझ सकता है परंतु उसके जीवन का व्यावहारिक रूप एक दूसरी ही करूंगा था सुनाता है इस व्यथा कथा की अंदरूनी सच्चाई यों का अन्वेषण उनके चिंतन का पहला आया है तो दूसरा है श्री मुक्ति के उपाय से संबंधित उनके विचार मनुष्य जाति की सभ्यता की सबसे प्राची रखा है और सभ्यता की भी परंतु उसे सामाजिक के साथ-साथ

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

नैतिक और धार्मिक बनाने के लिए अधिक परिष्कृत करना होगा जिस तरह भारतीय पुरुष के मनोरंजन के लिए रंग-बिरंगे पक्षी पाल लेता है उपयोग के लिए गाय घोड़ा पाल लेता है उसी प्रकार गए किसी को भी पाल तथा अपने वाले पशु पक्षियों के समान ही वह शरीर और मन पर अपना अधिकार समझता है भारतीय पति पत्नी के संबंध को पालतू पशु पक्षियों और मालिक के बीच के संबंध से अमित करके निसंदेह महादेव विवाह संबंधी हमारे परंपरागत धारणाओं के आगे प्रश्नचिन्ह लगा दिया है माधुरी के अनुसार भारतीय समाज में नारी को यद्यपि कहने के लिए देवी कहकर पुकारा जाता है किंतु यह सर्वविदित है कि उसे आज भी संपत्ति या एक वस्तु से अधिक मान्यता नहीं मिल सकी है उसे के राशि का ही जीवन जीने के लिए विवश किया जाता रहा है महादेवी जी एक प्रबुद्ध नारी है इसलिए पुरुष समाज द्वारा सताई गई नारियों की पीड़ा को भी अच्छी तरह जानते हैं इसी कारण पुरुष वर्ग के प्रति उनका आक्रोश स्वभाविक है महादेवी वर्मा मानती है कि नारी में जो अदम्य शक्ति निवास करती है यदि अपने प्रति होने वाले अत्याचारों के प्रतिकार स्वरूप व है उसका उपयोग करें तो पुरुष वर्ग उसकी दास्तां शिकार करने नहीं जाएगा किंतु वह नारी की दुर्बलता को जानता है इसलिए वही हथकंडे अपना कर उसे अपनी मुट्ठी में लगता है और नारी की यह दुर्दशा है उसकी सहनशक्ति इसी का अनुचित लाभ को यथावत सर उठाता रहता है आ जा सकता है श्रीमती महादेवी की दिशाएं सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

श्रृंखला की कड़ियां महादेवी वर्मा टेस्ट 45
गवेषणा केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा पृष्ठ 28
महादेवी वर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व डॉ निर्मला तेवतिया पृष्ठ 25
महादेवी वर्मा श्रृंखला की कड़ियां पोस्ट 90
करिश्मा सोनू जी के थॉमस के विचार बेस्ट थॉट विवाद और महादेवी का श्रीचंदन
स्त्री विमर्श डॉ विनय कुमार पाठक पृष्ठ 24
स्त्री विमर्श डॉ विनय कुमार पाठक श्रेष्ठ 25
की वर्ड्स ??

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language